

# ‘विश्व-सभ्यता को यूनान की देन’

**Mandip Kumar Chaurasiya**

**Assistant professor**

Dept. Of A.I.H. & Archaeology

Patna University, Patna-800005

**M.A.-II Semester**

**Paper/CC – (7) Ancient World Civilization**

सांस्कृतिक दृष्टि से प्राचीन विश्व का सबसे उन्नत देश यूनान था। अतः यूनानियों की देन से विश्व-सभ्यता बहुत समृद्ध हुई। यूनानियों ने साहित्य, कला, दर्शन, एवं राजनीति के क्षेत्र में काफी उन्नति की। यूनानियों द्वारा लिखी हुई पुस्तकें आज भी विश्व-साहित्य की अनुपम निधि हैं।

## राजनीतिशास्त्र

गणतंत्रात्मक शासन के सिद्धांत विश्व-सभ्यता को यूनान की बहुत बड़ी देन है। यूनानियों ने राजनीतिशास्त्र में बहुत बड़े प्रयोग किये। प्लेटो तथा अरस्तू जैसे विचारको ने राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में अनुपम ग्रन्थों का प्रणयन किया। अरस्तू द्वारा पहली बार विश्व के इतिहास में विभिन्न शासन पद्धतियों का वर्गीकरण किया गया तथा प्लेटो ने विश्व के सामने आदर्श राजा की कल्पना प्रस्तुत की। प्लेटो ने ‘रिपब्लिक’ तथा अरस्तू ने ‘पोलिटिक्स’ नामक पुस्तक लिखी।

## दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में यूनान की देन अद्वितीय है। पश्चिमी जगत में दार्शनिक चिंतन का श्रीगणेश यूनान में ही हुआ। दर्शन के क्षेत्र में प्राचीन यूनान में बहुत बड़े-बड़े दार्शनिक पैदा हुए। जिनकी रचनाएँ आज भी दर्शन

साहित्य की अमूल्य निधि है। प्राचीन यूनान के तीन दार्शनिक विश्व-इतिहास में सर्वश्रेष्ठ दार्शनिक माने जाते हैं।

### सुकरात (470ई०पू०-366ई०पू०)

यह अपने समय का सर्वश्रेष्ठ विचारक एवं सत्य का निर्भीक प्रचारक था। यह नवयुवको को सत्य की शिक्षा देता था। वह एथेंस के गणतंत्र के लिए खतरनाक समझा गया तथा विषपान द्वारा मार दिया गया।

### प्लेटो (427ई०पू०-347ई०पू०)

यह सुकरात का सबसे बड़ा शिष्य था। इसे पाश्चात्य दर्शन का प्रवर्तक माना जाता है। इसने 'रिपब्लिक' नामक ग्रंथ का प्रणयन किया। इस ग्रंथ में उसने राजनीतिशास्त्र तथा दर्शन के गूढ तत्वों का विवेचन किया। इसके विचार आज भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। 'रिपब्लिक' में उसने आदर्श राज्य की कल्पना प्रस्तुत की।

### अरस्तू (384ई०पू०-322ई०पू०)

यह प्लेटो का शिष्य एवं सिकन्दर का महान गुरु था। यह विचारक, गंभीर विद्वान तथा बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न दार्शनिक था। इसकी प्रतिभा से विद्वता एवं ज्ञान का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं था। उसने दर्शन, राजनीति, तर्क शास्त्र एवं जंतु विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया। आज भी तर्कशास्त्र एवं दर्शन शास्त्र में उसके सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते थे।

इन महान दार्शनिकों के अतिरिक्त, यूनान में कुछ अन्य दार्शनिक मतों का प्रादुर्भाव हुआ। इनमें मुख्य मत निम्नलिखित है-

### सिनिक मत

यह मत पलायनवाद अथवा भाग्यवाद से मिलता-जुलता है। इस मत के दार्शनिकों ने प्राकृतिक जीवन बिताने का अनुरोध किया। जनके अनुसार पृथ्वी ही सबसे अच्छी शय्या है तथा आकाश ही सबसे सुंदर वस्त्र है। इन लोगो ने शासको तथा सामाजिक व्यवस्थाओ का मजाक उड़ाया। इनके अनुसार जो कुछ हो रहा है, ठीक हो रहा है। दूसरे शब्दों में, यह नियतिवादी दार्शनिक मत था। इस मत के सबसे प्रधान दार्शनिक डायोजिनीज (412ई०पू०-323ई०पू०) था। इसने 'यूटोपिया' नामक पुस्तक में इस मत के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

## एपिक्युरियन मत

इस मत का प्रवर्तक एपिक्युरस नामक दार्शनिक था। इस मत के अनुसार मनुष्य को आनंद की प्राप्ति के लिए सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए। आनंद की प्राप्ति के लिए बुद्धि का प्रयोग करना चाहिए। इसके अनुसार वास्तविक आनंद दुःखों से मुक्ति पाना है।

## स्टोइक मत

स्टोइक मत के दार्शनिक सदाचारपूर्ण नैतिक जीवन के समर्थक थे। मनुष्य को, इसके अनुसार, प्राकृतिक नियमों के अनुसार जीवन बिताना चाहिए। मनुष्य को एक तरह से दुःख तथा सुख का सामना करना चाहिए। इन लोगों को फलित ज्योतिष पर बहुत ही विस्वास था। इस मत सबसे बड़ा दार्शनिक जेनो था, जिसका समय ई०पू० 350-260 ई०पू० है।

## हेडोनिस्ट मत

इस मत के दार्शनिक आनंदवादी थे इनके अनुसार आनंद ही जीवन का मुख्य उद्देश्य था। इस मत का सबसे बड़ा दार्शनिक एरिस्टपस (435 ई०पू०-356 ई०पू०) था।

## साहित्य

प्राचीन यूनान में अत्यंत उच्च कोटि के साहित्य की रचना की गई। प्राचीन युग के लेखकों, कवियों तथा नाटककारों की रचनाएं आज के युग में भी आदर्श मानी जाती हैं। उच्च कोटि के कवि एवं नाटककार आज भी उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं।

## महाकाव्य

प्राचीन यूनान में महाकाव्यों की रचना हुई। ये महाकाव्य विश्व साहित्य की अनुपम निधि हैं। प्राचीन यूनान का सबसे प्रसिद्ध महाकाव्यों का रचनाकार होमर नामक कवि था। होमर प्राचीन यूनान का सबसे प्रसिद्ध एवं सबसे प्राचीन कवि था। जिसने 'इलियड' तथा 'ओडिसी' नामक दो महाकाव्यों की रचना की।

## हिसियड

यह प्राचीन यूनान का दूसरा महाकाव्य के रचयिता था। इसका समय आठवीं शताब्दी के मध्य का माना जाता है। इसके प्रसिद्ध रचना का नाम है- 'कार्य तथा काल'(Work and Day)। इसने विशेषतः खेतिहरों के जीवन का चित्रण किया।

इसके साथ ही यूनान में गीतकाव्य का भी विकास हुआ। सेफो नामक प्रसिद्ध कवियित्री हुई। इसके अलावा यूनान में अत्यंत उच्च कोटि के दुःखांत तथा सुखांत नाटक लिखे गए। इसेलरा, युगिपाईडीज तथा सोफोकलीज नामक अत्यंत प्रसिद्ध दुःखांत नाटककारी ने विश्व-साहित्य को अपनी अनुपम कृतियों से समृद्ध किया है। सुखान्त नाटककारों में एरिस्टोफेनिज नामक नाटककार पेरिकलीज के युग में हुआ।

### इतिहास

प्राचीन यूनान में इतिहास की भी रचना हुई। विश्व के प्रथम इतिहासकार हेरोडोटस (484ई०पू०-425ई०पू०) ने यूनान पर ईरानी आक्रमण का इतिहास अत्यंत रोचक ढंग से लिखा। इतिहास लिखने की कला का जन्मदाता भी मन जाता है। दूसरा प्रसिद्ध इतिहासकार थ्यूसिडाइडीज (460ई०पू०-400ई०पू०) हुआ। इसने वैज्ञानिक ढंग से इतिहास लिखने की कला को जन्म दिया।

### कला एवं स्थापत्य

यूनानियों का कलापक्ष अत्यंत जागरूक था। वे सौंदर्य के पुजारी थे। डोरिक शैली का सर्वश्रेष्ठ नमूना, पेरिकलीज के युग में बनाया गया पोर्थेनन्मक मंदिर प्रमुख है। इसके साथ कोरिथियन शैली में सुंदर खंभो की सजावट मुख्य है।

मूर्तिकला यूनानियों की उनकी प्रतिभा की अभिव्यक्ति एवं विकास का सुंदर उदाहरण है। यहाँ पर अनेक प्रसिद्ध मूर्तिकार हुए जिनमें फिडियस का नाम सर्वप्रमुख है। चित्रकारों में प्रमुख पोलिनैट्स था।

### विज्ञान

यूनान में एक से बढ़कर एक दार्शनिक हुए। जिन्होंने वैज्ञानिक खोज एवं चिंतन को प्रोत्साहित किया। जिनमें प्रमुख अरस्तु हुए। जिसने सर्वप्रथम प्राकृतिक विज्ञान का श्रीगणेश किया। वनस्पति-विज्ञान एवं जंतु विज्ञान

अरस्तू के चिंतन से विकसित एवं समृद्ध हुए। इसी प्रकार डायोस्कोराइडीज, थियोफ्रेस्टस एवं एरिस्टार्कस जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक हुए।

गणितशास्त्र में भी यूनानियों ने असीम उन्नति की। इस क्षेत्र में उनकी देन अद्वितीय तथा अमर है। गणित के क्षेत्र में विशेषतः रेखागणित का अध्ययन यूनानियों ने किया।

थेलिस यूनानी दर्शन एवं विज्ञान का पिता, इस शास्त्र का जनक माना जाता है।

पाइथागोरस (582ई०पू०-507ई०पू०) - रेखागणित का सबसे बड़ा पंडित एवं वास्तविक प्रतिष्ठापक था।

युक्लिड (300ई०पू०) - यह भी रेखा गणित का बड़ा पंडित था। इसकी लिखी ज्यामिति की पुस्तक आज भी स्कूलों में पढ़ाई जाती है।

आर्कमिडीज (287ई०पू०-212ई०पू०) - यह गणितशास्त्र एवं भौतिकशास्त्र का प्रकांड विद्वान था। इसने सिचाई के काम आने वाली मिश्रित घिरनी का अविष्कार किया।

हेराक्लिट्स (540ई०पू०-475ई०पू०) - यह विश्व की एकता के सिद्धांत पर विस्वास नहीं करता था। इसके अनुसार परिवर्तन का क्रम बराबर चलता रहता है।

परमेनिडिज (500ई०पू०) - इसने चिरंतन विस्वात्मा की कल्पना की तथा उसे वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध किया। इसके अलावे एम्पीडोक्लीज, डेमोक्रीटस आदि जैसे प्रसिद्ध गणितज्ञ हुए।

चिकित्साशास्त्र के क्षेत्र में भी यूनानियों ने अभूतपूर्व योगदान दिया।

डायोजिनीज (500ई०पू०-430ई०पू०) - यह प्रथम बार शरीर-विज्ञान तथा चीर-फाड़ एवं विश्लेषण पर पहली पुस्तक लिखी।

हिप्पोक्रेटिज (460ई०पू०-377ई०पू०) - जिसे चिकित्साशास्त्र का पिता माना जाता है ने इस बात का खंडन किया कि बीमारियाँ प्रेतों के कारण होती हैं।

हेरोफिलस(300ई०पू०) - इसने चीर-फाड़ की विद्या का पिता माना जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि ज्ञान-विज्ञान का कोई भी क्षेत्र ग्रीक प्रतिभा से अछूता नहीं बचा। यूनानियों ने अपनी देन से साहित्य, दर्शन, कला एवं विज्ञान के क्षेत्र को समृद्ध किया। इन क्षेत्रों में उनकी देन अद्वितीय एवं अमर है। यूनान के कवि एवं नाटककार, दर्शनिक एवं वैज्ञानिक, मूर्तिकार तथा कलाकार संसार में सदैव आदर्श माने जाते तथा माने जाएंगे। इन्हीं की कृतियाँ विश्व-सभ्यता को यूनान की अमर देन हैं।